नवीन चन्द्र मिश्र

जन्म	-	01.01.1933 ई0
जन्म स्थान	-	सौराठ, मधुबनी
वृत्ति	-	प्राध्यापक-सी0एम0 कॉलेज, प्राचार्य, सहरसा कॉलेज, विश्वविद्यालयं प्राचार्य ल0ना0 मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा।
कृति	-	अंकिया नाट विवेचन (1984 ई0), प्रतिपदा: एक अध्ययन। विभिन्न पत्र-पत्रिकाम प्रकाशित निबन्ध आदि।

राष्ट्रीय एकताक प्रासंगिकता

राष्ट्रक सम्यक् विकास हेतु राष्ट्रीय ऐक्यक महत्ता स्वत: सिद्ध अछि। यावत पर्यन्त एक-एक व्यक्तिमे समष्टिक प्रति एकसूत्रताक भावक आविर्भाव नहि होएत तावत धरि राष्ट्रक कल्याणक परिकल्पने करब भ्रम होएत। राष्ट्रक सर्वांगीण विकासक हेतु लोकमे चेतना जागृत करए पड़तैक, लोकक मानसिकतामे परिवर्त्तन आनए पड़तैक। हाथ पर हाथ धऽ कऽ बैसने किंवा ककरो पैर खिचलासँ अभ्युन्नतिक मार्ग अवरुद्ध भए जाएत, जे लोक हितमे सर्वथा बाधक प्रमाणित होएत।

वर्त्तमान भारतमे एकताक प्रश्न अति जटिल भऽ गेल अछि। ई देश अत्यंन्त विशाल अछि। एहिठाम अनेक प्रकारक संस्कृति, धर्म ओ जाति केर अस्तित्व भेटैछ। एतय भारत-भूमि पर कतोक बेरि विदेशीक आक्रमण भेल आ आक्रमणकारी लोकनि अपन-अपन प्रभाव छोड़ैत गेल, जे विभिन्न जाति-उपजातिकेँ प्रादुर्भूत कयलक।

ई पावन देश ऋषि-मुनिक देश रहल अछि, तपस्वी साधकक पुण्यभूमि रहल अछि, ज्ञानी-विज्ञानीक कर्मस्थली रहल अछि। आ ई लोकनि समय-समय पर आविर्भूत भऽ विविधतामे एकताक संदेश प्रदान करैत रहल छथि। जगतगुरु आदि शंकराचार्य द्वारा चारि गोट शक्तिपीठक स्थापना सम्पूर्ण देशकेँ भावात्मक ऐक्य-सूत्रमे आबद्ध करबाक स्तुत्य प्रयत्न छल।

परंच देश मध्य विघटनकारी तत्त्वक इतिहास अति पुरातन थीक। एतय कतिपय छोट-छोट नृपति छलाह जे सर्वदा परस्पर साधारणो विषय पर प्रतिष्ठा-मर्यादाक मिथ्या भावना हृदय-प्रदेशमे राखि युद्ध करबा पर तुलल रहैत छलाह, जकर अनुचित लाभ विदेशी आक्रमणकारी लैत रहल। अत्यल्प सैनिकक साहाय्यैँ मोगल भारत पर अपन आधिपत्य स्थापित कऽ लेलक। देशी नरेश लोकनि आपसमे लड़िते रहलाह। एतबे नहि, अपितु एहीमे सँ किछु देशद्रोही सेहो भेलाह जे विदेशीकेँ अपन राजकोष किंवा सैनिकसँ सहायता पर्यन्त प्रदान कएल जे वस्तुत: घृणास्पद विषय रहल। जखन अंग्रेज द्वारा भारत पर आक्रमण ओ आधिपत्यक प्रयास भेलैक तँ सिराजुद्दौला प्रतिरोधक झंडा हाथमे थम्हलनि परंच हुनक सेनापति मीरजाफर हिनका धोखा दऽ देलक आ सत्ता हस्तगत करबाक प्रलोभनसँ प्रेरित भए अंग्रेजक मदति कयलक। यद्यपि अंग्रेज ओकरो मुँहेँ भरे खसौलक, कतहु के नहि रहऽ देलक। आपसी ऐक्यक अभावमे भारतीय जनता मुँहेँ तकैत रहल आ अंग्रेज आधिपत्य स्थापित करबामे पूर्णत: सफल भए गेल। अंग्रेजसँ लोहा लेबाक प्रयास कतेको खेप भेल। झाँसीक रानी लक्ष्मीबाई, तात्या टोपे, बाबू वीर कुंवर सिंह आदि सदृश योद्धा रणभूमिमे उतरि अपन-अपन साहस ओ वीरताक परिचय बलिदानसँ देलनि, जकर इतिहास साक्षी अछि। मुदा, हिनका लोकनिक संग पुरनिहार विशेष लोक रहनि नहि, तँ प्रयास सराहनीय रहितहु तात्कालिक निष्फल रहलनि, परंच एकर दूरगामी प्रभाव भारतीय पर दृष्टिगत होइछ।

भारतीय स्वतंत्रता-प्राप्तिक निमित्त सर्वश्रेष्ठ प्रयोजनक अनुभव भेलैक 'राष्ट्रीय एकता'क। मुदा, एकर सर्वथा अभाव रहने सम्पूर्ण विद्रोह अबल भऽ ध्वस्त भऽ गेलैक। अन्ततोगत्वा जखन अंग्रेजक निष्ठुरतापूर्ण व्यवहार भारतीयक

प्रति उभरलैक, तखन राष्ट्रीय स्तर पर भारतीयोमे एकताक भावना प्रस्फुटित भेल। ओना मुस्लिम लीग अपनहिं क्षुद्र सम्प्रदायवादक कारणेँ देशकेँ विभक्त कऽ देलक, जे दुनू देशक हेतु विनाशकारी रहल। तथापि राष्ट्रीय एकताक अंकुरनसँ देश स्वतंत्र भऽ कऽ रहल।

15 अगस्त 1947 ई0 मे भारत स्वाधीन भेल। लेकिन भाषावाद, सम्प्रदायवाद एवं क्षेत्रवाद अपन भार उठौलक। भाषाक मामला अति तन्नुक होइत छैक। तेँ स्वार्थान्ध नेतागण राजनीतिक मंच पर भाषाकेँ अस्त्र बनाए एकर अभ्युत्थानक प्रश्न जनताक समक्ष उठाए जनता ओ सरकारक मध्य प्रत्यक्ष टकराव करएबामे हास्यास्पद योगदान दैत रहल छथि। एतबे नहि, राजनीतिक गोरखधंधा वला व्यक्तिक द्वारा पड़ोसी राज्यक भाषाक संग सेहो तनावक स्थितिक जन्म भेल। भाषाक आधार पर राज्यक निर्माणक स्वर देशक कोन-कोनसँ गुंजित होमए लागल। हैदराबादसँ आन्ध्र पृथक् भेल। बम्बइ दू खंडमे विभक्त भेल-महाराष्ट्र ओ गुजरात। पंजाबसँ हरियाणा हटल। पुनः कतिपय मुद्दा लए एहि सभ राज्यमे परस्पर टकराव केर स्थितिमे दिनानुदिन अभिवृद्धि होइत गेल। एकर ज्वलन्त उदाहरण पंजाब थीक। आइ झारखंड-आन्दोलन सेहो चरमसीमा पर इहो पृथक झारखंड-राज्यक मांग राष्ट्रीय स्तर पर भऽ रहल अछि, आ एहि रूपेँ देशमे अन्तर्विवादक कारणेँ एकताक कमी देखबामे अबैछ, जकर अन्तर्राष्ट्रीय प्रभाव होइछ। एहि कमजोरीक लाभ विदेशी सहजतापूर्वक उठबैत अछि। कश्मीर समस्या एखन धरि बनले अछि। असमक समस्या आएल। ई सभ समस्या भारतक रीढ़ तोड़ि चुकल छैक। एकर विकासमे अतिशय अवरोधक देबालक रूपमे ई सभ समस्या ठाढ़ भेल प्रश्न- चिह्न बनल छैक।

आब भाषाक रूपकेँ देखल जा सकैछ। राष्ट्रभाषाक रूपमे हिन्दीकेँ सुप्रतिष्ठित करबाक सत्प्रयास जे सरकार द्वारा भेल तकर प्रबल विरोध दक्षिण द्वारा भेलैक। तमिलनाडुमे स्थिति तेहन भयंकर भऽ गेल जे एकरा भारत-संघसँ फराक करबाक नारा प्रारंभ भऽ गेल। हिन्दी भाषी लोकनिक हत्या होमए लागल। पुनः ओकर प्रतिक्रियास्वरूप उत्तर भारतमे तमिल भाषीक संग दुर्व्यवहार होमए लागल। सरकारकेँ दक्षिणक भावनाक रक्षार्थ संविधानमे आवश्यक संशोधन पर्यन्त करए पड़लैक। राष्ट्रीय एकताक लेल राष्ट्रभाषाक अत्यधिक महत्ता छैक। ओ सभ राष्ट्रीय भाषाक मध्य सम्पर्क-सूत्र स्थापित करैत अछि। संगहि सम्पूर्ण राष्ट्रक सामान्य भावनाकेँ अभिव्यक्ति दैत अछि। किन्तु, दुर्भाग्यवश हिन्दी राष्ट्रक एहि सेवासँ वंचित राखल गेल आ विदशी भाषा अंग्रेजी अपन अंग्रेजियत लए राष्ट्रक भाल पर चढ़ल रहि गेल। भाषाक आधार पर राज्य-निर्माणक मांग एखनहुँ ठाम-ठामसँ भऽ रहल अछि, जे निस्सन्देह राष्ट्रक एकतामे बाधक बनल देशकेँ कमजोर करबाक दिशामे अपन निन्दनीय भागीदारी लैत दखल जा रहल अछि।

एकता एवं राष्ट्रीय शक्तिमे अकाट्य सम्बन्ध अछि। कोनो राष्ट्र तावत पर्यन्त परिपुष्ट नहि मानल जा सकैछ यावत धरि ओकर विविध अंगमे परस्पर ऐक्य-भाव नहि होइक। मनुष्य रूप, रंग, जाति-धम, योग्यता ओ स्वभावादिमे एक दोसरासँ भिन्नता रखैत अछि; किन्तु व्यापक रूपेँ ओहि सभमे एक तरहक आभ्यन्तरिक एकता सन्निविष्ट रहैछ, जे

समान लक्ष्य दिशि प्रेरित करबामे एहि समस्त वैभिन्यकँ गौण कऽ दैछ। इएह आभ्यन्तरिक एकता थीक एकात्मकता, जाहि पर राष्ट्रीय विकास आ सुरक्षा निर्भर करैत छैक।

भारतमे प्राचीन कालसँ अद्यपर्यन्तक विभिन्नतामे एकताक परिदर्शन होइछ, आ इएह एकर अपन खास वैशिष्ट्य थीक। हिमालयसँ लए कन्याकुमारी तक प्रसृत एहि पैघ देशमे जे विभिन्न प्रकारक जाति, धर्म, भाषा, आचार-व्यवहारादि दृष्टिपथ पर अबैछ से सभ मालामे ग्रथित बहुरंगी पुष्प सदृश अपन सौंदर्य वैशिष्ट्य ओ सुरभिक रक्षा करैत समष्टि रूपेँ भारतीय संस्कृतिकेँ अभिनव सौंदर्य ओ सुगंधि प्रदान करैत रहल अछि। राष्ट्रीयताक एक सूत्रमे आबद्ध एहि विविधतहिसँ भारतीय संस्कृतिक इन्द्रधनुषी मनोमुग्धकारी स्वरूपक सृष्टि भेल अछि। भारतक ई वैशिष्ट्य प्राय: अन्य कोनो देशमे नहि दृष्टिगोचर होइछ।

वैदिक कालहिसँ अद्यावधि भारतवर्षक सर्वदा आभ्यन्तरिक राष्ट्रीय ऐक्यक अनुभूति लैत रहल अछि। हमरा सभक पूर्वज परिकल्पना कएने रहथि-'संगच्छध्वं संवदध्वं संवो मनांसि जानताम्'। अर्थात् संग-संग चलू, संग-संग बाजू एवं सभक चित्त एक रहय, जकरा हमरा सभ आइ भावात्मक एकता कहैत छियैक तकर वास्तविक स्वरूप इएह छैक।

कैलाशसँ कन्याकुमारी तक समान महत्त्वक तीर्थक स्थापना कएनिहार हमरा सभक पूर्वज संभवत: ई उम्मीद कएने होएताह जे एहि सभ तीर्थक पर्यटनसँ देशक लोकमे ई भावना जागृत रहलैक जे आहार-व्यवहार, भाषा, वेश-भूषा आदिमे भिन्नता रहितहु हमरा लोकनि एकहि गाछक शाखा छी, अर्थात् सभ एकहि छी।

आर्य धर्म केर परम्परागत भव्य भावना हमरा सबहिक पुरातन ग्रन्थादिमे विशद रूपेँ उपलब्ध अछि, जाहिमे राष्ट्रीय एकताक कतिपय प्रमाण भेटैत अछि। एहि देशक महापुरुष लोकनि द्वारा सृजित क्रमिक रूपेँ कोनो ग्रंथक पारायणसँ एहि प्रकारक राष्ट्रीय एकताक दृष्टान्त भेटैत अछि। कहबाक अभिप्राय ई जे, एतुका संस्कार एही प्रकारक वैचारिक-आदर्शसँ, परिवेष्टित-परिप्लावित अछि।

राष्ट्रीय संकटक क्षणमे भारतीय उच्चादर्शक उदाहरण महाभारतक निम्न श्लोकमे भेटैछ, जे निस्सन्देह प्रेरणास्पद थीक-

'वयं पंच वयं पंच, वयं पंच शतानिते

अन्यै महा विवादेतु स्वयं पंचाधिकशतम्।'

-एहिमे कौरवकेँ लक्ष्य करैत युधिष्ठिरक कहब छनि जे ओना तँ हमरा सभ पाँच भाइ छी आ कौरव लोकनि एक सय भाइ छथि। किन्तु, दोसरासँ विवाद भेला पर हमरा लोकनि एक सय पाँच भाइ छी। वाह्य संकटक आगमनसँ

आपसी अन्दरूनी समस्त भेदभावकेँ विस्मृत कऽ जाएब भारतक प्रमुख वैशिष्ट्य रहल अछि। इतिहास एहि तथ्यक साक्षी अछि जे एहि आदर्शकेँ बिसरला उत्तर भारतवासी संकटमे समय-समय पर अबैत रहल अछि।

बीसम शताब्दीमे आबि भारतमे लोक-चेतना जाग्रत भेलैक। अंग्रेजक गुलामीक विरोधमे संघर्षरत रहबामे राष्ट्रीय एकताक स्वरूप उभरल, ओ एही कारणेँ स्वतंत्रताक दर्शनो लोककेँ भऽ सकलैक।

हमरा सभक शक्तिक प्रतीक थीक 'दुर्गासप्तशती'। ओकर मननसँ ई ज्ञात होइछ, जे जखन महिषासुरक अत्याचार चरमोत्कर्ष पर पहुँचल तखन देवगण अपन ऐक्यक प्रतीक आदिशक्ति दुर्गाक आह्वान कएल। आइ जखन हमरो सभक स्वतंत्रता, क्षेत्रीय अखंडता तथा जीवन-यापन पद्धति पर समस्या उत्पन्न भऽ गेल अछि तखन हमरा सभक हेतु ई अत्यावश्यक अछि जे हमरा लोकनि राष्ट्रीय एकताक रूपमे आत्मशक्तिक प्रतिष्ठापना ओ संवर्द्धना करी। तखने हमरा सभ 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः' क अपन सनातन लक्ष्य-पूर्त्तिमे सफल भऽ सकैत छी।

कहलो गेल अछि जे एकतामे बल अछि। एकतासँ जतए शक्ति-संचित होइत छैक; आत्म-बल बढ़ैत छैक, मर्यादाक रक्षा होइत छैक, सांस्कृतिक उत्कर्षक मार्ग प्रशस्त होइत छैक ततहि विभाजन, ईर्ष्या, झगड़ा, राग ओ द्वेषसँ चारित्रिक पतन होइत छैक, जकर प्रभाव नहि मात्र समाजक एक इकाई पर पड़ैछ, अपितु राष्ट्रव्यापी प्रभाव एकर पड़ैत छैक। सम्पूर्ण राष्ट्र सएह प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूपेँ अपन तंत्र-संचालन बाधित भए जाइछ, जकर लाभ अन्यान्य देश लेबए लगैछ।

साम्प्रदायिकतासँ राष्ट्रीय एकता पर आघात पहुँचैत छैक। प्रायः प्रत्येक सम्प्रदायमे किछु व्यक्ति एहन होइत अछि जे अपन स्वार्थ-सिद्धिक हेतु साम्प्रदायिक दंगा कराए दैत अछि। जन-समुदाय अर्थ-संकटक ज्वालामे जरैत, जीवनक अस्तव्यस्ततामे पिसाइत ओहि दिश ध्यानो नहि दैछ आ यावत ध्यान जाइतो छैक तावत धरि विपत्तिक पहाड़ ओकरा पर अभूतपूर्व ओ अप्रत्याशित रूपेँ टूटि चुकल रहैत छैक, जे ओकरा चकविदोर लगा दैछ। एहिसँ राष्ट्रीय एकता खंडित होइछ। राष्ट्रकेँ अपार क्षति एहिसँ पहुँचैत छैक।

समाजक एक इकाईसँ लए राष्ट्रक सम्पूर्ण जनसमूह पर्यन्त एक दोसराक संग शृंखलाबद्ध अछि, कड़ी रूपमे। सभक कर्तव्य भए जाइछ राष्ट्रीय प्रगतिक प्रति कटिबद्ध ओ प्रतिबद्ध होएबाक। प्रत्येक व्यक्तिमे यदि एहि प्रकारक भावनाक प्रादुर्भाव भऽ जाए तँ सकल कल्याण स्वयंसिद्ध अछि। किंतु, यदि एहिमे किओ दुर्भावना रूपी कालुष्य राखि जीवन-पथ पर रहल तँ एकताक राशि कमजोर भए जएतैक, फलतः राष्ट्रकेँ गर्तमे जाइत बिलम्ब नहि होएतैक आ दासताक वएह रूप समक्ष झलकऽ लगतैक जे पूर्वमे मोगल ओ अंग्रेजक शासन-कालमे कहियो छल। अस्तु, राष्ट्रीय एकता राष्ट्रहितमे सर्वथा प्रासंगिक थीक।

शब्दार्थ

जटिल–कठिन

सर्वांगीण–सभ तरहेँ

बाधकं–विघ्न पहुँचावय वला

अभ्युन्नति–विकास

स्तुत्य–प्रशंसनीय

ऐक्य–एकता

अबल–कमजोर

निष्फल–बेकार

निष्ठुरता–कठोरता

स्वार्थान्ध–स्वार्थ मे आन्हर होयब

अप्रत्याशित–जकर आशा नहि हो

दृष्टान्त–उदाहरण

पारायण–पूरा पाठ करब

पुरातन–प्राचीन, पुरान

प्रश्न ओ अभ्यास

1. लघूत्तरीय प्रश्न–

(i) राष्ट्रभाषाक रूपमे कोन भाषा प्रचलित अछि?

(ii) भाषाक आधार पर राज्यक निर्माण भेलासँ कोन तरहक हानि होयत?

(iii) मुस्लिम लीग कोन तरहेँ भारतीय एकताकेँ प्रभावित कयलक?

(iv) हमरा लोकनिक बीच 'दुर्गासप्तशती' कोन तरहेँ ख्यात अछि?

(v) अंग्रेज बहुत कम सैन्य शक्तिसँ भारत पर राज्य कयलक तकर मूल कारण की छल?

(vi) राष्ट्रीय एकताक चर्चा कोन ग्रन्थमे भेटैत अछि?

(vii) कोनो दू योद्धाक नाम लिखू?

2. दीर्घोत्तरीय प्रश्न-

(i) राष्ट्रीय एकताक की महत्त्व अछि?

(ii) राष्ट्रीय एकता कोन-कोन बात पर निर्भर करैत अछि?

(iii) भारतक राष्ट्रीय एकताक प्रमाण कोन ग्रंथसँ भेटैत अछि?

(iv) राष्ट्रीय एकताक हेतु भाषाक की योगदान होइछ?

(v) की साम्प्रदायिकता राष्ट्रीय एकतामे बाधक सिद्ध होइछ?

(vi) राष्ट्रीय एकतासँ की सभ लाभ होइत छैक?

3. भाषा अध्ययन

(i) सन्धि विच्छेद करू:

अभ्युन्नति, स्वार्थान्ध, हास्यास्पद, अद्यावधि, दुर्भावना।

(ii) विशेषण बनाउ :

राष्ट्र, एकता, देश, भारत, जाति।

(iii) निम्नलिखित शब्दक वाक्यमे प्रयोग करू :

पावन, अत्यल्प, परिकल्पना, लोकचेतना, अभिप्राय।

(iv) विपरीतार्थक शब्द लिखू :

तथ्य, एक, आहार, सार्थक, राजा।

योग्यता-विस्तार

1. अपना वर्गमे एहि निबंधक आधार पर वाद-विवाद प्रतियोगिता कराउ।

2. निबंध लेखकक विषयमे अपन शिक्षकसँ आओर जानकारी लिअ।

□□□